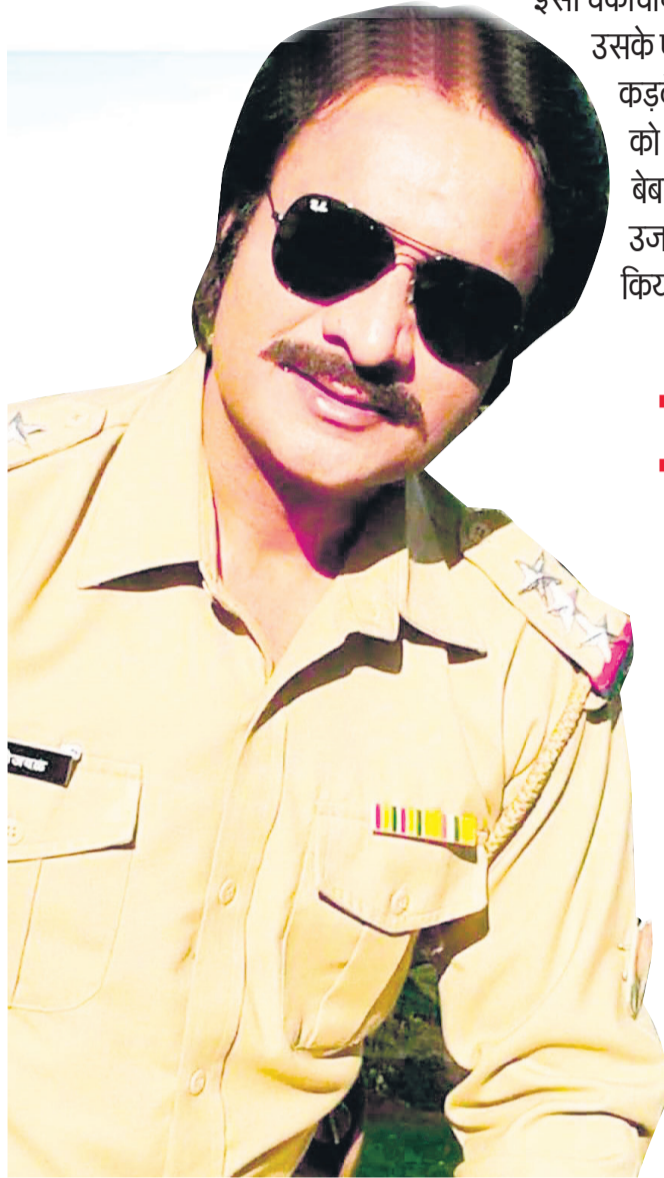


# शब्द रंग

मुंबई चमक-दमक, सपनों और संघर्षों की नगरी है, यहीं पर अभिनय की दुनिया में जाकिर हुसैन खान हैं, जिनकी जड़ें पूर्वांचल के छोटे से जिले बस्ती से जुड़ी हैं। इनकी शुरुआती शिक्षा भी यहीं से हुई। बचपन बस्ती की सादगी, रामलीला और नुकड़ नाटकों के बीच बीता, जहां उन्होंने बंदर बनकर पहली बार मंच का स्वाद चखा, लेकिन जैसे-जैसे उम्र बढ़ी, मायानगरी मुंबई की चकाचौंध ने उन्हें अपनी ओर खींचा और भीड़ भरी सड़कों पर काम की तलाश, छोट-छोटे रोल पाने के लिए लगातार संघर्ष करते रहे। क्राउड एक्टिंग से सफर शुरू कर धीरे-धीरे टीवी और फिल्मों में अपनी जगह बनाई। जाकिर आज भी खुद को जमीन से जुड़ा कलाकार मानते हैं। मुंबई की इसी चकाचौंध और उसके पीछे छिपे कड़वे सच को उन्होंने बेबाकी से उजागर किया।



## क्राइड से किरदार तक: एक अभिनेता की बेबाक कहानी



निशा सिंह  
वरिष्ठ पत्रकार

■ क्या इंडस्ट्री में आने के लिए संघर्ष करना पड़ा?  
■ बिल्कुल, मैं सुबह काम की तलाश में घर से निकलता और शाम को निराश होकर घर लौट आता। धीरे-धीरे मुझे क्राउड एक्टिंग में काम मिलने लगा। हंसते हुए, कहीं आग लग गई तो चिल्लाने को कहा जाता, 'टीपू सुल्तान' में मुझे 'जय हनुमान' बोलने को कहा गया। फिर मुझे 1992 में आमिर खान के साथ फिल्म 'जो जीता वही सिक्कंदर' में काम मिला। उस समय मुझे एक दिन के 50 रुपये और 15 दिन के 750 रुपये मिले थे। आज साढ़े सात करोड़ रुपये मिल जाते तो भी वो खुशी नहीं मिलेगी, जो उस साढ़े सात सौ रुपए में मिली थी।  
■ किन-किन कलाकारों के साथ आपने काम किया?  
■ मैंने हेमा मालिनी, अनिल कपूर, संजय दत्त, अमिताभ बच्चन के साथ पोलियो ऐड के लिए काम किया। इसके अलावा सलमान खान, इरफान खान, जूही चावला, सोनू सूद, कादर खान और परेश रावल जैसे

कई कलाकारों के साथ काम किया। टेलीविजन में सीआईडी, पवित्र रिश्ता, चाचा चौधरी, सावधान इंडिया के कई एपिसोड में भी मैंने एक्टिंग की।  
■ आपको असली पहचान कब मिली?  
■ 1998 में जब सीआईडी सीरियल शुरू हुआ, जिसमें मुझे विलेन का रोल मिला। वहीं से पहचान मिलने शुरू हो गए। मैंने करीब 4000 टीवी एपिसोड और 72 से 75 फिल्मों में काम किया है।  
■ अभिनेता बनना मुश्किल है, पर नेता बनना आसान है, आपने ऐसा क्यों कहा?  
■ व्यंग्यात्मक अंदाज में, देखिए, अभिनेता बनने के लिए खूबसूरती, टैलेंट और व्यक्तित्व चाहिए, लेकिन आज के दौर में नेता बनने के लिए सिर्फ बोलने की कला काफी है। हंसते हुए, एक आईएएस की सैलरी दो या ढाई लाख रुपये महीना होती है, जबकि एक सुपरस्टार एक फिल्म के करोड़ों रुपये लेते हैं। इससे अंदाजा लगा सकते हैं कि अभिनेता बनना कितना मुश्किल है।  
■ क्या इंडस्ट्री में नेपोटिज्म है? क्या पैसा

और बैकग्राउंड भी जरूरी है?  
■ आज के समय में टैलेंट के साथ-साथ पैसा भी जरूरी हो गया है। अगर मैं किसी अरबपति बाप का बेटा होता, तो शायद सुपरस्टार बन गया होता। जहां तक नेपोटिज्म की बात है, तो नेपोटिज्म हर जगह है, राजनीति में भी है।  
■ कास्टिंग काउच पर आपकी क्या राय है?  
■ मुझे नहीं लगता कि इंडस्ट्री में कास्टिंग काउच जैसी कोई चीज भी है। कुछ लोग आगे बढ़ने के लिए खुद समझौता करते हैं।  
■ क्या आपको सुपरस्टार न बनने का अफसोस है?  
■ बिल्कुल नहीं, आज मैं ज्यादा सुकून में हूँ। स्टार्स के पास सबकुछ होता है, लेकिन प्रेशर भी बहुत होता है। मेरा मानना है 'जो प्राप्त है, वहीं पर्याप्त' है।  
■ सुशांत सिंह राजपूत के बारे में आपकी क्या राय है? शायद वह आपके दोस्त थे?  
■ जी, सुशांत मुझसे उम्र में काफी छोटे थे पर, मेरी मित्रता थी। उन्होंने बहुत सफलता पाई, लेकिन मैंने उन्हें

फ्रस्ट्रेशन में देखा। इसलिए कहते हैं कि शोहरत हमेशा खुशी नहीं देती।  
■ आपका एकता कपूर के साथ क्या विवाद था?  
■ 2014 में एकता कपूर की एक सीरियल के शूटिंग के दौरान कलाकारों के बीच विवाद हो गया और मैं बीच-बचाव करने चला गया, जिससे बात बढ़ गई और मामला एकता कपूर और महेश भट्ट तक पहुंच गया। बाद में समझौता हो गया, लेकिन मुझे सिरियल छोड़ना पड़ा।  
■ कोई यादगार पल?  
■ एक बार प्रयागराज कुंभ मेले 2019 में परफार्मेंस करने के लिए मेरे पास फोन आया, मुझे लगा कोई मजाक कर रहा है, क्योंकि मैं मुस्लिम हूँ, लेकिन एक घंटे के अंदर मेरे एकाउंट में जब 50 हजार रुपये एडवॉंस आ गए तब मुझे विश्वास हुआ और 15 मिनट परफार्मेंस करने के लिए मुझे डेढ़ लाख रुपये मिले थे। आज तक मैं इस बात को भूला नहीं।  
■ आपके लिए सबसे गर्व का पल?  
■ जब 2019 में इंडियन सिनेमा का

सबसे बड़ा अवार्ड 'दादा साहेब फाल्के फिल्म फाउंडेशन अवार्ड' मुझे मिला, वो मेरे लिए सबसे गर्व का पल था। इसके अलावा महाराष्ट्र सरकार ने एक कलाकार के रूप में मुझे सस्ते दाम पर प्लैट भी उपलब्ध कराया।  
■ आपकी आने वाली फिल्म?  
■ जी, 'दुनिया तेरे नाम' एक लव स्टोरी पर आधारित फिल्म है, जिसमें मैं मुख्य विलेन की भूमिका निभा रहा हूँ और इस साल के अंत तक फिल्म रिलीज करने की योजना है।  
■ स्टारडम बनने का स्वाद देखने वाले युवक-युवतियों को आप क्या सलाह देना चाहेंगे?  
■ आज का दौर डिजिटल का है। अगर आपके भीतर हुनर है, तो बड़े मंच का इंतजार मत कीजिए, अपना खुद का मंच बनाइए। अगर आप साधारण पृष्ठभूमि से आते हैं, आपका कोई मजबूत आधार नहीं है, तो स्टार बनने का सपना देखना बहुत कठिन डगर है। शोहरत एक नशा है, जो दिखने में आकर्षक है, लेकिन अक्सर इंसान को भटका भी देती है।

## ज्येष्ठ माह और जलदान का महत्व

'जल ही जीवन है' ज्येष्ठ माह की गर्मी की प्रचंडता इस कहावत को सौ फीसदी सच साबित करती है। सूर्य किरणों की तपन की ज्येष्ठता (प्रचंडता) के कारण हिन्दू पंचांग में वर्ष के तीसरे महीने को ज्येष्ठ कहा जाता है। सर्वाधिक बड़े दिन वाला यह महीना गर्मी के हिसाब से सबसे ज्यादा कष्टकारी होता है। इस महीने में 'नौतपा' नक्षत्र भी लगता है। 'नौतपा' यानी सर्वाधिक तपने वाले नौ दिन। ज्योतिषीय गणना के अनुसार माना जाता है कि जेट महीने में सूर्य जब रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश करता है, तब गर्मी प्रचंड पड़ती है। इन दिनों में वायुमंडल का अधिकतम तापमान 45 से 48 डिग्री तक पहुंच जाता है। आधुनिक मौसम वैज्ञानिक इसे 'हीट वेव' या लू वाले दिन भी कहते हैं।



पूरनम नेगी  
लेखिका



### भंडारों की पावन परंपरा



### लोककवि घाघ व भड्डरी का सटीक मौसम विज्ञान

ज्ञात हो कि हमारे भारत की पुरातन कृषि संस्कृति के सदियों पुराने अनुभवों से निकले निष्कर्ष आज के मशीनी युग में भी कितने सही साबित हो रहे हैं, यह विचारणीय बिंदु है। भारतीय लोकजीवन के मौसम विज्ञानी माने जाने वाले महाकवि घाघ और भड्डरी द्वारा मध्ययुग में मौसम, वर्षा और कृषि को लेकर की गई भविष्यवाणियों आज की इक्कीसवीं सदी में भी उतनी ही सटीक हैं, जो तब थीं, जब पर्यावरण संकट और ऋतु चक्र परिवर्तन जैसी कोई परिकल्पना भी नहीं थी। जानना दिलचस्प हो कि कहावतों और लोकोक्तियों में की गई इन भविष्यवाणियों में 'नौतपा' के बारे में लोककवि घाघ कहते हैं- 'जेट मास जो तपे निरासा, तब जानों बरसा की आसा। तपै नवतपा नव दिन जोय, तो पुन बरखा पूरन होय।। अर्थात् यदि ज्येष्ठ माह में नौतपा खूब तपा तो उस साल बारिश जमकर होगी। वहीं यदि नौतपा के दौरान बारिश हो गई तो इसे 'नौतपा' का गलना कहा जाता है। ऐसा होने पर मानसून के दौरान अच्छी बारिश की संभावना नहीं होती। इसी तरह महाकवि घाघ के समकालीन लोककवि भड्डरी भी कहते हैं- 'सर्व तपे जो रोहिनी, सर्व तपे जो मूर। परिवा तपे जो जेट की उपजे सातों तूर।। अर्थात् जब जेट के रोहिणी नक्षत्र की परेचा में गर्मी खूब गर्मी पड़ती है, तो उस वर्ष जमकर वर्षा होती है। वाकई हैरानी की बात है कि इन बातों का कोई वैज्ञानिक आधार न होते हुए भी यदि हम देश के मानसून के बारे में सोचें तो यह अनुमान सही प्रतीत होते हैं।

ज्येष्ठ माह में सूर्य के प्रचंड ताप के कारण कुएं, नदी, तालाब व पोखर आदि जलस्रोतों के सूख जाने के कारण जल संकट की समस्या गहरा जाती है। हम मनुष्य तो किसी तरह अपने आप को इस भीषण गर्मी से सुरक्षित रख लेते हैं, लेकिन उन निरीह पशु-पक्षियों का क्या जिनके लिए यह आग उगलती गर्मी किसी जानलेवा मुसीबत से कम नहीं होती।  
भूख और प्यास की वजह से पशु-पक्षियों के दम तोड़ने की सर्वाधिक घटनाएं इसी जिलजिलाली गर्मी के मौसम में होती हैं। इन मूक पशु-पक्षियों का यूँ भूखा-प्यासा रहकर दम तोड़ना हमारे प्रकृति चक्र और पर्यावरण के लिए बेहद अशुभ है। आज वैज्ञानिक भी मानते हैं कि भोजन श्रृंखला के चलते एक जीव का जीवन दूसरे पर और वनस्पती व जीवों का जीवन परस्पर अस्तित्व पर टिका है।  
आक्रांतिक रूप से कोई एक जीव मरता है, तो उससे पूरी श्रृंखला प्रभावित होती है। ज्ञात हो कि हमारे वैदिक मनीषी मानवी चेतना के मर्मज्ञ होने के साथ प्रकृति संरक्षण के ज्ञान विज्ञान के भी गहन जानकार थे। इसीलिए उन्होंने सदियों पूर्व ही कुदरत के ऋतु चक्र परिवर्तन के

चार दशक पहले हमीद खिजर को लगा शेर-ओ-शायरी का चस्का, आज जुनून की सूरत अखिहार कर चुका है। पांच गजल संग्रहों के शायर हमीद खिजर ने अपने जुदा तेवरों वाली शायरी से अलग पहचान बनाई है। अब हमीद का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। वह अपनी शायराना सलाहियों के दम पर धीरे-धीरे मंजिल की तरफ बढ़ रहे हैं। उन्हें राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान उत्तर प्रदेश की ओर मिर्जा गालिब अवार्ड और अकबर इलाहाबादी अवार्ड मिल चुके हैं।

-राशिद हुसैन जुगनू  
शाहजहांपुर

शाहजहांपुर के मोहल्ला दिलाजाक में सितंबर 1974 में जन्मे हमीद खां हमीद खिजर को शायरी विरासत में नहीं मिली। गुनगुनाने के शौक ने धीरे-धीरे हमीद को गजल तक पहुंचा दिया। उन्होंने कम उम्र में ही बाकायदा गजल लिखना शुरू किया था। उनका मार्गदर्शन पड़ोस में रहने वाले कहानी लेखक व शायर अयूब 'असर' ने किया। उन्होंने हमीद की बेतरतीब शायरी को राह दिखाई। हमीद ने अपनी जादुई आवाज से जब शायरी गुनगुनाई तो सभी उनके मुरीद होते चले गए।  
हमीद ने अपनी अधूरी गजलों में नौ बरस तक अयूब असर से सही कराई। बाद में उन्होंने की सलाह पर उस्ताद शायर 'सागर' वारसी से जुड़ गए।  
नए मार्गदर्शक शायरी की नोक-पलक दुरुस्त करना सिखाया।  
इससे हमीद 'खिजर' की गजलों में नयापन आया।



## गजलों से पहचान बनाते हमीद

अपनी जादुई आवाज और खूबसूरत कलाम से हमीद शहर में होने वाली महफिलों में छा गए। उन्होंने अपना दिलो-दिमाग शायरी में इस कदर लगाया कि उनके पास गजलों के ढेर लग गए।  
हमीद ने इन बिखरी गजलों को संकलन के रूप में छपवाने में काफी मेहनत की। उनका पहला उर्दू गजल संग्रह 'लम्स-ए-शबनम' 2002 में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह को खूब सराहना मिली। इसके बाद हमीद ने वर्ष 2002 में हिन्दी गजल संग्रह 'धड़कन' के नाम से निकाला। 'धड़कन' के जरिए हमीद ने अपने और जमाने के सुख-दुख का एहसास कराया है। हमीद का तीसरा गजल संग्रह उर्दू में 'लरजेत साये' वर्ष 2015 में, चौथा हिन्दी गजल संग्रह 'ठंडी हवा के झोंके' 2016 में और पांचवा गजल संग्रह 'कबे शबनम' वर्ष 2020 में प्रकाशित हुआ। उन्होंने एक संग्रह 'भोर की लालिमा' 2022 में प्रकाशित कराया, जिसमें बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर कई रचनाकारों के लेख शामिल हैं।  
लोक निर्माण विभाग शाहजहांपुर में कार्यरत हमीद को शायरी की भूख है। वह चाहे कितने भी मायूस क्यों न हों, लेकिन मुश्किलों को भी झेलने का कलेजा रखकर हमीद, 'गजल' का खाका तैयार कर ही लेते हैं। हमीद ने गजल को कई रंग व ढंग देने में 'उस्तादाना' फन दिखाया है। हालांकि वह खुद इसे नहीं मानते। पाठकों के बीच उनकी शायरी पसंद की जाए, बस इसी को हमीद अपने लिए सबसे बड़ा इनाम मानते हैं। उनका कहना है कि शायरी ने उन्हें जीने की राह दिखाई है, इसे वह हमेशा लिखते रहेंगे।  
हमीद को हिन्दी-उर्दू साहित्य सेवा के लिए उत्तर प्रदेश राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान की ओर से दो बार पुरस्कार भी मिले। उन्हें मिर्जा गालिब अवार्ड और अकबर इलाहाबादी अवार्ड से नवाजा गया। पुरस्कार मिलने से हमीद के हौसलों को नई उड़ान और नया आकाश मिला।